STRATEGIC CAMPAIGN PLANNING

To Maintain Your Dominance In Politics, Requires Two Different Kinds Of Campaigning.

1. **Regular Campaigning**
2. **Election Oriented Campaigning**

Election Campaign Planning Is Very Much micronised & Goal Oriented Task Rather Than Just Making An Event Since elections Are There.Every Political / Election Campaign Must Decides It’s Goal Which May Be Achieved By It.

We Provide Our Services For Both Kind Of Campaigns.

Regular Campaigning – No Matter Weather You Are In Power Or In Opposition,A Regular work Is Required.A Regular Campaign Helps You To Keep Intact with Your Existing Vote Bank By Voters engagement Activities Hence The Bonding Between You & Voters Always Remains Maintain.

Election Oriented Campaigning- Approx 1 Yrs Before Of Elections Dates,Your Regular Political Campaigning Must Be Shifted To Election Oriented Campaign.Several Kinds Of Infra & Strategy Is Required To Develop & To Synchronize With With Different Components Of Of Your Political Environments,Failing Which May Yield Serious Negative Impact.The Gap Between Winning & Second Position Party / Candidate Are Always Marginal & It’s Just Happen Due To Small Small Mistakes Or Non effective Management Due Lack Of A Proper Mgt. System.

Election Oriented Campaign Planning Is Very Much micronised & Goal Oriented Task Rather Than Just Making An Event Since elections Are There.Every Political / election Campaign Must Decides It’s Goal Which May Be Achieved By It.

राजनीति में आगे क्यों नहीं बढ़ पाते कुछ लोग

आपने राजनीति को अपना पेशा चुना। बहुत कुछ उम्मीदें लगाकर आप इस पेशे में उतरे थे, बहुत सारी व्यक्तिगत और सामाजिक अच्छाईयां आपके अंदर थी और आपका अनुमान था की आप बड़ी तेजी से इस क्षेत्र में आगे बढ़ जायेंगे। परन्तु वर्षों की मेहनत करने से ऐसा नहीं हुआ।

अाये दिन मुझे फ़ोन आते रहते हैं और लगभग सवाल एक ही रहता है कि इतनी मेहनत करने के बाद भी मेरा राजनैतिक करियर आगे क्यों नहीं बढ़ पाता है ? या फिर सर। मेनहत हम करते हैं और टिकट किसी और को मिल जाता है ? या फिर कुछ इस तरह के प्रश्न कि हमने तो चुनाव में सब कुछ बहुत बेहतर किया था, फिर भी हम इतने कम वोटों से क्यों हार गए? इन सारे प्रश्नो को सुनने के बाद मुझे बस एक ही बात सूझती है, ये की सारे के सारे प्रश्न राजनैतिक अनिश्चितता के प्रबंधन से जुड़े है। दरअसल वास्तव में राजनीती और युद्ध दो ही ऐसे क्षेत्र है जिनमे कि अनिश्चितता सबसे ज्यादा होती है। अतः राजनीती को भी मैं किसी युद्ध से कम नहीं मानता हूँ, जहाँ पर की किसी भी तरह का आक्रमण आप के ऊपर हो सकता है। राजनीति और युद्ध का मात्र एक ही फलसफा होता है की अपने आपको बचाते हुए आपको तुलनात्मक रूप से दूसरो से अपने आपको बेहतर साबित करना होता है। दरअसल ये सारी समस्याएं आपके सामने इसलिए आती है

बड़ी टेढ़ी है राजनीति की चाल

आपका राजनैतिक कद और राजनैतिक पद वर्षों की मेहनत के बाद भी आखिर क्यों नहीं बढ़ पा रहा है? क्यों आप वहीं के वही खड़े रह जाते हैं।

क्योंकि जब आप अपने राजनैतिक करियर को बदलते हुए परिवेश के अनुसार गंभीरता से नहीं लेते हैं और अपने राजनैतिक हितो के लिए सचेत नहीं रहते है। आप 360 डिग्री राजनैतिक प्रबंधन को दरकिनार कर देते हैं या फिर आप, अपने पार्टी या फिर अपने राजनैतिक आकाओ की कृपा मात्र पर निर्भर होना ही राजनीती में सफलता को मंत्र मानते है। या फिर आप ये सोचते है की अभी से क्यों कुछ करना, जब चुनाव आएंगे और टिकट मिलेगा तो फिर हम अपनी तैयारी करेंगे। ध्यान देने योग्य बात ये है कि आज भी बहुत सारे लोग राजनीती तो करते है पर इसे एक फुल टाइम करियर की तरह गंभीरता से नहीं लेते है। याद रहे, राजनीति एक ऐसा विषय है जिसका एग्जाम हर 5 सालो में एक बार होती है। परीक्षा के मात्र कुछ महीनो पहले तैयारी शुरू करने से यानि की टिकट मिलने के बाद से तैयारी शुरू करने से पूरे पांच साल के कोर्स को आप कितनी दक्षता से पूरा कर लेंगे यह कहना मुश्किल है। इस तैयारी के बारे में तो यही कहना है कि लगा तो तीर नहीं तो तुक्का। मात्र एक दो महीने बहुत कम समय होता है की आप पूरे जनमानस के राजनैतिक विचारों को अपने पक्ष में बदल दे। जनमानस के राजनैतिक विचारों को अपने पक्ष में करना एक बहुत ही कठिन काम है। अतः सबसे पहले राजनीति को अपना फुल टाइम करियर बनाये और हर दिन आपको इसमें काम करने की जरुरत है। दूसरी सबसे बड़ी बात ये है की राजनीति में भी दो पहलु पर आप को एक साथ करना चाहिए। पहला ये कि आप अपने आप को स्थापित करते जाये, दूसरों पर आप अपनी बहुत बनाते जाये, और साथ ही साथ अपने हितो कि रक्षा भी करते जाये। यानि कि अगर मेनहत आप ने की है तो उसका क्रेडिट कोई और न लेने पाए चाहे फिर वो आपकी पार्टी के अंदर का कोई व्यक्ति हो या फिर बाहर किसी दूसरी पार्टी का। सबसे बड़ा सवाल यही आता है कि ये कैसे किया जाये? यह भी एक अत्यंत कठिन रणनीतिक कार्य है पर असंभव नहीं। आपने देखा होगा कि परिस्थितयां कैसी भी रही हो, पार्टी जीती हो या हार गई हो, पर कुछ उदाहरण ऐसे भी हैं, कि अमुक प्रत्याशी हमेशा ही जीता है। या फिर कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि कुछ प्रत्याशियों के टिकट हमेशा ही निश्चित रहते है, और तो और यहाँ तक कि ऐसे भी उदाहरण है जो कि चुनाव हार गए, या फिर लड़े भी नहीं, फिर भी उनको किसी और रास्ते से लेकर मंत्री पद दिया गया। इन सारे मुद्दों का जबाब जानना है तो सबसे पहले यह जानना चाहिए कि चुनौतियां कहां कहां से आती है?